

[illegible]

[illegible][illegible]

न॥ नद्वद्वागीश्वरं वदन्नाकासतनूनिर्व। आद्याविर्भूमेणान्यां सद्ममययथाविधि॥ कृष्णमक्षविधिम् ॥ स
 ॐ नमः सूर्य ॥ अक्षरं वदन्नाकासतनूनिर्व ॥ अथाग्नीमहाय ॥ धनयीभस्मन॥ वागीश्वरीविद्याकर्तागोत्रय॥
 यजमाननज्जायायैहम् कारुण्यं ॥ अथवा
 मनु ॥ अथविद्याकलायै ॥ दक्षिणतडकवर्क
 मनयुर्वहायकं न॥ यूनमनु ॥ अथयनिष्ठा
 यन्नाकि कलायै ॥ यूर्ध्वणयप्रिमहायकं न॥ नम्यायविजिह्वागतनमनु ॥ अक्षरं वदन्नाकासतनूनिर्व ॥ अथाग्नीमहाय ॥ नम्यायवि
 मनु ॥ अक्षरं वदन्नाकासतनूनिर्व ॥ अथाग्नीमहाय ॥ धनयीभस्मन॥ यन्मिधुयजामकास्वान

हाय॥ यूनन॥ अक्षरं वदन्नाकासतनूनिर्व ॥ अथाग्नीमहाय ॥ धनयीभस्मन॥ वागीश्वरीविद्याकर्तागोत्रय॥
 य ॥ अथयलाकाय ॥ धनयीभस्मन॥ वागीश्वरीविद्याकर्तागोत्रय॥
 वनिष्ठा कृत्तिकायै दक्षिणतडकवर्क
 लय ॐ नमः सूर्य ॥ अक्षरं वदन्नाकासतनूनिर्व ॥ अथाग्नीमहाय ॥ धनयीभस्मन॥ वागीश्वरीविद्याकर्तागोत्रय॥
 नि ॥ दक्षिणतडकवर्क
 वजलिमलासतनूनिर्व ॥ अक्षरं वदन्नाकासतनूनिर्व ॥ अथाग्नीमहाय ॥ धनयीभस्मन॥ वागीश्वरीविद्याकर्तागोत्रय॥
 दानियूनन॥ यूर्ध्वणयप्रिमहायकं न॥ नम्यायविजिह्वागतनमनु ॥ अक्षरं वदन्नाकासतनूनिर्व ॥ अथाग्नीमहाय ॥ धनयीभस्मन॥ वागीश्वरीविद्याकर्तागोत्रय॥

गङ्गा ॥ वकाशकान पुद्गलानि निवृत्त ॥ अमुल २ ॥ वलि ॥ दृगाय विविध काययादि ॥ कृद्या दानि अमुल विम
 र्जनी ॥ शिथल ॥ यून ४ पुद्गलानि निवृत्त ॥ दिय ४ ॥ मंकाव ४ ॥ जनभा रगवनिष्ठ ॥ कृत्तिकाये कांक्षी कृं धाव अर्धा
 व अर्धा नामूखी कृंक्षी किलि २ विवृत्त नम ४ ॥ नि ॥ वीकल ॥ अमुल ॥ यो कल ॥ ननेव गाठनं ॥ कवथ
 नावर्ग ० नं ॥ धनय ४ ॥ मंकाव ॥ थन सिंधु ॥ यजामका खान ॥ युजन ॥ दुंज ० वानथ २ ॥ युं व
 दानथ २ ॥ मुं गुनिका नथ २ ॥ जवां वी वं अग्नि ॥ येन न्याय २ ॥ वगीनी मूलम ॥ नु ॥ यर्ग ॥ ललमं युं
 ॥ अवाअ मूलाधन ॥ कृष्ण अग्नि निगमथ ॥ दहिण वरुन ॥ वायु श्रीसं वरु ॥ जानू र्यां रू मो धृत्वा ॥
 अग्नादिमासन कर ॥ जय ॥ वगीनि २ ॥ स्वस्वधवी समनु भाव २ ॥ उरु व मूदया ॥ अग्नि स्थापनं ॥ अग्निर्ध

यत्रयमनु ४ ॥ ज अग्निं वदिते न न्याय २ ॥ कृष्ण व वीज मिनि सुखा कूलवा गीश्वरी मगदुला ठिकाया मानमं
 मूखी स्थाया ॥ स्व ॥ मिवाअ मालिनीय ० न ॥ यर्ग ॥ हृदयमर्जन काष्ठ द्यथ नाकाय ॥ यश्रवलि विथ ॥
 कूलवा गीश्वरी ॥ स्व ॥ अयम ॥ लखन ॥ हायमम ॥ नासि वरु ॥ गङ्गान्य २ ॥ मंयु ॥ अग्नि
 लजयन भाव ॥ वा गीश्वरी कृष्ण कं कलवर्ध ॥ विथ ॥ ज अग्नि रू व वाय २ ॥ ज कांक्षी मरु नाविका
 येय विमव काय २ ॥ मंयु ॥ यव निल अ ॥ कन द्युत न वालन विथ ॥ मंरु ॥ जनभा रगवनिष्ठ
 कमलाये कांक्षी हृदयाय स्वाहा ॥ अग्नि २ ॥ कांक्षी अनाय स्वाहा ॥ दृगादग्नि ॥ गरु दानं ॥ १ ॥ ज अग्नि रू व वा
 य २ ॥ जथा व अर्धा व अर्धा नामूखी वदु वयाथ उरु व व काय २ ॥ मंयु ॥ कृत्तिकाये कूल दीयाये कांक्षी निवम

[illegible]

सूक्तकनास ॥ कृष्णग्रंथि समिधं यदुर्व्वदीप्तं ॥ यूजन ॥ डाद्यास्नाय ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यूर्व्व ॥
 जालास्नाय ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यद्विष्णु ॥ यूर्व्वदी ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यूर्व्व ॥
 अलास सिनकात कृष्णयू ॥ यूजन ॥ यद्विष्णु ॥ यद्विष्णु ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यूर्व्व ॥
 दीर्घिर्नन ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यद्विष्णु ॥ यद्विष्णु ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यूर्व्व ॥
 लू ॥ यूजन ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यद्विष्णु ॥ यद्विष्णु ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यूर्व्व ॥
 वायु मूढायक ॥ ॥ गतायणीन ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यद्विष्णु ॥ यद्विष्णु ॥ अस्मां ग्रीष्मं गीर्णनाथ डाग्रुन्वायायू ॥ यूर्व्व ॥

८
कृष्णनिश

॥ कृष्णनिधि यत सिद्ध उज्जामका स्वानत ॥ यूजन ॥ विष्णुवचन रुक्माय नागप्रियतथ २ ॥ युगीत उरुवचदीहि
नर्तन ॥ याय ॥ अन्ननर्तयुतीकाय रुक्मानागसूक्तन ॥ विष्णुदामयेतीकाम् कृष्णवृत्तययुक्तयत ॥ यूजन ॥
गवृत्तमाय २ ॥ वीविष्णु मूर्तय २ ॥ वांवीयुं वांवी विष्णुवयायु ॥ वां ददया यतमस्यादिर्धर्तन ॥ आवा
कृ मूडाधन ॥ ॥ अन्निकलुकावर्ण ३ ॥ य सवलि विधिमन ॥ लूँ लूँ द्याय वद रुक्माय सूत्राधि
यतयनम ३ ॥ युद्ध ॥ नूँ अन्नयनकि रुक्माय नजाप्रियतथ २ ॥ अन्नय ॥ मूँ यमाय वद रुक्माय यु
ताप्रियतथ २ ॥ दक्षिण ॥ दूँ नैसयाय वद रुक्माय वाक्साप्रियतथ २ ॥ नैसय ॥ वृँ दवृत्तय यान रुक्माय
जलाप्रियतथ २ ॥ ययिम ॥ यूँ वायव ध्वज रुक्माय यवनाप्रियतथ २ ॥ वायव ॥ सूँ कथनाय गदा रुक्माय धनाधि

यतथ २ ॥ उरुव ॥ दूँ लूँ लानाय शिगूल रुक्माय रुक्ताप्रियतथ २ ॥ लूँ लान ॥ अँ अन्ननाय यक रुक्माय नागप्रिय
तथ २ ॥ अय ॥ उँ वक्ता यद रुक्माय स्वर्नाप्रियतथ २ ॥ उद्ध ॥ लूँ तिलाकयाल १ ॥ ध्वननीवलि ॥ यूँ नयुजन ॥ सिँ ग
अवर्नयुवयीभधिकाय रुद्रकसमनाप्रियतथ महारुववाय साभय सगलय विवावायनम ३ ॥
॥ १ ॥ गकवर्नयुवयीभधिकाय शियुवा न काय निवावाय समनाप्रियतथ महारुववाय सा
नाप्रियतथ महारुववाय साभय सयविवावा यनम ३ ॥ २ ॥ गयवर्नयुवयीभधिकाय अन्निय
तावाय धुमाकूल समनाप्रियतथ महारुववाय साभय सयविवावायनम ३ ॥ २ ॥ गटवर्नयुवयीभधिका
य अन्निकिदाय धावावकाय समनाप्रियतथ महारुववाय साभय सयविवावायनम ३ ॥ ४ ॥ गगवर्नवा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॥ नमो विष्णवे वरुणाधरं ॥ अमुं गायत्र्यं ॥ मूलं नमिषीद्वर्णं ॥ यूनवशुभायुधं ॥ ननेवगाउनं ॥ कवथ
नायगुलुनं ॥ हृदयन विष्णवे वसुधुतन ॥ दृगुद्वि ॥ यदुसंस्कार ॥ यकूलिसधयकनक ॥ वक्षसयीधु
त्वा ॥ दृगविन्दुदानं ॥ कृगप्रधिआकावराय म
विष्णुमयीधुत्वा ॥ दृगविन्दुदानमनु ॥ विष्णु
गविन्दुदानमनु ॥ नूदायस्वारा ॥ भसराय ॥
ॐ श्रीं ॥ अमुं गायत्र्यं ॥ यवायनम ॥ अमुं गायत्र्यं ॥ कवथन कृगन कृगुधायक ॥ अमुं गायत्र्यं ॥ कृगदानिकाय
॥ वक्षप्रति २ विष्णवे वरुणाधरं ॥ यलस्वंधाकल्यना ॥ कृगप्रतिन दृगदक्षिणरागगृहीत्वा ॥ मनु ॥

१७
कृष्णमिश्र

नं सुविमलं ग्रीथागङ्गानां विनं वधरं शनाथवद्विगतं नृणां लाक्य लाकार्थिनं ॥ गिलाहूनि यूलुसू मूकू कू सुखाहा ॥
थगिलाहूनि ॥ ॥ गंगामूलदालसदवर्लभाय ॥ निर्विकुनादि ॥ यव ॥ गंगायवावर्ल सांभयाभक मां वेलं कावयन
धूयदीय जाय भागविधिथं ॥ निथय आदिन थय २ मनुग आहूनि ॥ थय २ भागलधियकीरु नि
यूयवर्ल कलण कमु आदिन ॥ १ मू ककुष वमहाकि यवायखाहा ॥ भव १४ ॥ १ मू ककुषवी
नकिमहिनायखाहा ॥ भव १४ ॥ १ मू वाकु युनिष्ठिनासिथयनि महाथय महास नं ॥ यव
यवाधिनेष्यय युवनानियवुद्धना ॥ युयु निष्ठिनासियलूयं ॥ असंखयुलुडरुमं ॥ सव्यायविनिमूकं ॥ १ मू वाकु
निवाहूया ॥ यलूयं सर्वभेष्यय लक्ष्मीमननि वद्धनं ॥ यवयवयसमनं महाभक्तिकवयव ॥ महासोरायकथ

व महाशगहूकवयु ॥ यवयवमभाकं यवयुनिवांगनि ॥ युनिष्ठा ॥ ॥ वलिलाहायुजा ॥ जायभागविधिथं भासा
गमयुनाले स्वीनकायमनव ॥ ॥ डरुवथगुलियायविधिथं ॥ वलिविथ ॥ यजमान गुजलियायकथं ॥ धूय
दीय ॥ जाय ॥ भाग ॥ ग्रीमवका ॥ निथय ॥ मारुवि जय ॥ निथयकमयाकका ॥ गयल ॥ यगुजाग ॥ यगु ग
यल ॥ यश्रवलिस ॥ अग्निक्कुस हि हायक ॥ थगवलिसमाल ॥ हिथ ॥ मांसाहूनि यानं लाकाट १०५
॥ यश्रभावाथाय ॥ मज्जयुद्धमायुद्धं याम्भ १ रुकवाधिनागनं ॥ दीवश्रवावर्लयुष्टिं सिद्धिना ॥ अय
कारुव ॥ मभ्रुसिद्धिदवाश्र सिद्धिदकाममायुयाग ॥ यश्रयागेयरीकवां थवानां वुष्टिकावर्ल ॥ यश्रभावायुजनी ॥
१ मू मज्जयुद्धमायुद्धं ॥ युद्धं ॥ १ मू वकभावायां यादुकां ॥ दक्षिण ॥ १ मू दीवभावायां यादुकां ॥ यथिम ॥ १

१८
कजा न८॥

॥ यजमानयतिष्ठ ॥ ॐ कं कं कं ॥ आयार्यमनुसिद्धिबहु स्वाहा ॥ आयार्ययान् ॥ आयार्ययुजा ॥ ॥ न्यानि
कविथमनु ॥ ॐ रु रु वि ८ स्व ८ कं कं रु रु स्वाहा ॥ १०५ ॥ यष्टिकविथमनु ॥ ॐ रु रु क वि क य व म रु रु रु व वा य म ॥ १०
कुम्भरीणाकिमहिनाय स्वाहा ॥ १०६ ॥ ॥ यजव
॥ वक्रा ॥ अदि ॥ ॐ सिना ॥ अदि ॥ ॥ युधिर्द्धा ॥ का ॥ ॥
रु रु व रु ॥ मयनम ॥ मय ॥ दधुलायुयिनाय ॥ ना
र्जनकारु ॥ ॥ अयायिनाय ॥ गल ॥ ॥ ना गन ॥ ॥ थं थूलरु ॥ वक्रुलाय ॥ ॥ यिथु क र्वरु ॥ ॥ मधाय ॥ वक्र ॥ ॥ यनिसि ॥
॥ अशलि ॥ ॥ कं कं कं ॥ स्वस्मान ॥ रुयालाययादुका ॥ ॥ रिष्ठा ॥ ॥ यजमयलि ॥ ॥ मूजवादि ॥ ॥ वक्रुषादि ॥ ॥ स्वाकमहावलि ॥

भूय दीय जायमान ॥ यजवलियान् ॥ आयार्यमनु ॥ ॥ यवधान्यादिथयवलियान् ॥ जलिम्यालममूं
कं ॥ यव ॥ ॥ अम्य ॥ लाजा ॥ समिध ॥ दधुलायन ॥ ग्रीरुल ॥ रुगुठन ॥ वक्रुवीरुल ॥ विर्यं ॥ सुमुख ॥ सगयुष्य ॥ ॥ अगनिल
॥ कृष्णिल ॥ ॥ वक्रुगिल ॥ ॥ रिक्क ॥ ॥ रिक्कला ॥ ॥ वृयक
॥ कयुव ॥ कमुवि ॥ ॥ कं रु ॥ मूल ॥ रुल ॥ यका
॥ नर्ग रुद्रयाग ॥ ॥ यजदीयवृत्तिका ॥ १०७ ॥ ॥ गययाज
॥ नर्ग रुद्रयाग ॥ ॥ अन्नसंकल्प ॥ यविगभायन ॥ ॥ अन्नवलिद्युयानसविथ ॥ ॥ ॐ रु रु रु ॥ स्वाहा ॥ ॥ यव ॥ ॥ ॐ रु रु रु ॥ स्वाहा
॥ दक्षिण ॥ ॥ ॐ रु रु रु ॥ स्वाहा ॥ ॥ यविम ॥ ॥ यव रु रु रु ॥ स्वाहा ॥ ॥ उरुव ॥ ॥ ॐ रु रु रु ॥ स्वाहा ॥ ॥ ॐ रु रु रु ॥ स्वाहा ॥ ॥ अग्नि ॥ ॥ यो

[illegible]

पूजयेत्वा ॥ स्यात्तावकं त्यादि ॥ सद्यसि पूजुं सुमूढं लक्ष्मि स्वाहा ॥ यजमानस्य धनं कस्यार्थं यद्यत्र प्रवासस्तु य ॥ प्रवा
ज्जामुखं कृत्वा ॥ मणुले सस्यानकथाय ॥ ज्ञानं साधय ० ॥

२०
॥ श्रीगणेश ॥

१ॐ नमः श्रीकृष्णाय नमः ॥ यासाविष्णुना नृणां यत्र यत्र वा केचन द्वादशयुक्ता नादानमनुलाब्धिका
मयदण्डकलाडुक्लिगागणिवान् । सीकायात्मवन्निजिगुवनकमलसद्विष्णुमिथयं ॥ १० ॥ युगेम न
सहजार्थवर्षवयवाहु ॥ स्यामात्रकाणि नृणां सुतरु वलमितामलमार्गलीला विष्वाष्टीयाय नृणां सुतरु
वनमिताभस्वलावद्वकाश्री । धयीनानाजडावेव दूकसुतरुवायव्ववाकणरात्रा सामग्रीकृष्णिकाया
विद्यययुममगाहुनविद्यायभाध ॥ ॥ सुद्व० ॥ नैसगुर्गसुठिकमलिमयं यन्त्रवैकुण्ठयुक्तं वाहीनी
र्थययुक्तं सकलगुणनिष्पेयश्रवत्तोषधेय । यक्षुयक्षुयणमं मुनिजननमिर्गभविर्गसर्वराव गाव्यधनोमिरु
क्षानिवर्णगमित्युताकसुसूक्तिनभाश्मु ॥ ॥ ॐ नमः श्रीगुह्याय ॥ श्रीमदभुलियालिं सुतरुवनमिर्गथव

धर्ममनाहुं नागर्णमममसूक्तगतिगुरुकर्मसत्तयीजीवरुर्ग । यक्षानागाभृणारिमुनिजनसकलेऽयुजिर्गसिद्धिर्ल
के वन्द्यदिव्यालनार्थदण्डगाननयनं विग्रहकाश्रनारु ॥ ॥ ॐ नमः ॥ गुणार्थकान्तिविर्गवकलसुखरुर्गया
वर्नरुधुवः ॥ सदीर्घायाय विर्गमुनिजननमिर्ग
वैसूक्तसूक्तानिसूक्तं वन्द्यवर्गुयकगुं द्विजनि
द्वलानिजमकवावद्वयाणीसमीत्र यक्षगानकद
संवाद्रविगरुयकवायन्दसुयायिधवा यागिन्यः ॥ सर्वदवासुतरुवनमहिगायां शुवः ॥ सर्वदवाः ॥ ॥ अथवायसुया
थायसुतरुवनयदः ॥ सामथथाथरुर्ग वधाश्चध्विगीयं नयथवदनं वाहनीवकधायं । गायणीयसुगार्गनयन

२१
॥

मयलियटवय (अ) वयं दया विष्णु ४ यदुनमृ किं वयं वसु मती यदुपुष्पु गुणः ॥ ॥ अस्मत्सु नार्थः सनु क
लनसु लुनेदि (य) वता सुधीता वयं वदो रुवदु ॥ यथि म ४ दाने ४ म दामा या ग्री कृति काथया ४ ग्री सिद्धि ल द्वायवाः
कजानि मां मा कृति यदु निमित्ता (थ) न स्वस्मान् कृणया लाय वदु (अ) दि मृ सि ता म रु शि वया ये यया ग दि ज
यादि धा गि नी सहि मा य ग ल गु व द क रु उ काय सा मय स ग ल य वि वा वा य दि वि दि क ह् ल्या दि ला क या ला य
सुधीता वयं वदो रुवदु ॥ ग्री ग्री कृति का नि रु द्वा व को य मू र्ज या य थ म् म् क रु ल द्या यि ना रु व दु ॥ गुरु म
मु स द्वा ज ग रु व नि रु ग क था आ नि य ल या नि स द्वा र स द्वा ज न ४ गुरु वि ना रु व दु ॥ गवा द्वा (ग) य ४ गुरु रु व दु ॥ अ
या य म रु सि द्धि व दु वा जा ध र्म वि ज थो व दु य जा सु रि न ४ स नु स द्वा स स्वा सु रि ना रु व दु य य न्य का ल व यी

रुवदु गुरु रुवदु ॥ द्वियद अगुष्य दानां नि रु व दु य द्धि रु व दु ॥ द्वा व र्ध नु का ल ज न य ति व सु धा न सार् स य द्धि म
ग्री वा द्या म नु ग धा न य वि दू व म ति ४ या रु वा जा ध र्मि ॥ मो र्ज नां सा धू य ग्री कृ ल य व ति ज न जा ति द्वा आ वि ना र्ग
ला कानां रु कि ता व ४ प रु व दु वि य ल रु कि ल र वा गु शा ॥ अस्म द्वा द्या वि य ति ग्री ग्री मू क म न्न थ व स
ख द्धि सि द्धि व दु ॥ य ज मा न स य ज मा नी नां गु व व सि द्ध र्म ना न वृ द्धि व दु ॥ य ज मा न स स ग ल स्य वि वा र्ज
ग्री मू य वा वा य मे य र्ज न ध न ल क्री र्म ति स का न वृ द्धि व दु ॥ स न ४ स न ति व न र्म मू क ति ना वि ध र्म या
था द या वा जा न ४ य ति या य य नि व सु धा ध र्मि ता स द्वा । का ल र्म ति य धि (ग) ज ल मू य ४ स नु य जा मा दि ना मा द ना
ध न वृ द्धि वा न्ध व स द्धि (अ) वि ४ य मा द्या ४ स द्या ॥ स्व स्ति य जा यं ४ य ति या ल य र्म न्या स न मा (न) म ही म ही न ४ (ग) वा द्वा

[illegible][illegible]

२४
क्याजनि॥

१॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

युगीत ०
२३ कजादि॥



॥ कजादि॥
॥ कजादि॥

१ नमामिधावर्कधर्व यद्विर्गु सर्वकर्मसु । वेष्टानवा मरुतज्ज दवानां रुवा
दायकं ॥ सर्वकर्मणि साक्षिर्त्वं । अत्र शत नकावर्क । अत्रियादिनाथाय ॥
साक्षाद् दायकं ॥ मयुश्च नूनित्यादि यदु कर्म सदानिय । अत्र
यायगुवृत्त्यश्च नमस्तु ॥ निदायकं ॥ दधिहामात्युवायुष्टि ॥ श्री
वराभनर्ग निर्क । यत्मा सत्तुयुर्गदूत्वा सर्वयाधिविनागर्ग ॥ वा
जयक्षान्तिलेहमि । अत्र युष्टि यद्विर्गु । कृणुम्येव सदाहामा । कृणुके सत्तु
लेष्टिय ॥ १ ॥ ॥ अर्क ४ मरुतज्जिवाधि । यदुष्टयाला सकामिर्द । खदिर्विर्गु

थलाशया यामासवदूयुक्त ॥ समी समयकयाय । मोरार्गमधूयुष्टि । अत्र कृणुयुक्तम । दूष्टि अत्र युष्टि यद्विर्गु ।
कृणुयुक्तम । अत्र युष्टि यद्विर्गु । अत्र युष्टि यद्विर्गु । अत्र युष्टि यद्विर्गु ।
वृष्टि साधन । सर्वकामयसिद्धय ॥ रुवायारु जाय
या ॥ कथ ॥ ॥

॥ ४८ ॥
॥ ४८ ॥